संपादकीय

प्रिय पाठकों! हमने दो अक्तूबर को महात्मा गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धा सुमन अर्पित कर शत्-शत् नमन किया। इसके साथ ही हम बापू की 150वीं जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। उनके सपनों को पूरा करने का हमारे पास यह एक बहुत बड़ा अवसर है। शिक्षा के द्वारा हम सब मिलकर गाँधीजी के सपनों का भारत बनाएँगे। शिक्षा द्वारा हमें प्रत्येक विद्यार्थी में संधारणीय विकास की क्षमताएँ एवं कौशल विकसित करना होगा। जिससे वे वैश्विक गाँव (ग्लोबल विलेज) में गुणवत्तापूर्ण जीवनयापन कर सकें तथा आपस में मिलकर श्रेष्ठ समाज एवं मानव जाति का विकास करने में योगदान दे सकें।

इसी कड़ी में हमें विद्यालयों का परिवेश भी खुशहाल बनाना होगा। क्योंकि विद्यालय विद्यार्थियों की खुशी और कल्याण के लिए उचित कौशल सिखाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं। खुशहाली शिक्षा पर आधारित लेख 'खुशहाल विद्यालय एवं खुशहाल विद्यार्थी—संप्रत्यय एवं समाधान' है, जिसमें विद्यार्थियों के लिए खुशहाली के अर्थ एवं महत्व को समझाने पर चर्चा की गई है।

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करना है। इसी आलोक में 'विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु पाठ्य-सहगामी क्रियाओं की उपादेयता' नामक लेख में, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ कितनी सहयोगी हैं, इस पर विस्तृत चर्चा की गई है।

'प्राथमिक स्तर पर रचनात्मक गतिविधियों द्वारा पर्यावरण अध्ययन' नामक लेख में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा प्रकाशित कक्षा 3 से 5 तक की पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में दी गई विषय-वस्तु का विद्यार्थियों के जीवन में महत्व एवं उपयोगिता को इंगित करते हुए बताया गया है कि शिक्षकों द्वारा बच्चों को क्रियाशील गतिविधियों में व्यस्त करना होगा ताकि वे सूक्ष्म अवलोकन, चित्रों, आरेखों, वर्गीकरण व स्वयं करने वाली गतिविधियों में शामिल होकर मूल कौशल सीख सकें।

वर्तमान में साक्षरता के अर्थ में गुणात्मक परिवर्तन आया है। अब साक्षरता क्रियात्मक रूप में परिवर्तित हो चुकी है। गुणवत्तापूर्ण साक्षरता के लिए सांवेगिक साक्षरता (संवेगात्मक साक्षरता) आवश्यक है। हम संवेगों को भाषा के माध्यम से भी प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार संवेग व भाषा एक-दूसरे से जुड़े हैं। इसी पर आधारित शोध पत्र 'मध्य प्रदेश की कक्षा आठवीं की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *सुगम भारती* का संवेगात्मक साक्षरता के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन' दिया गया है।

वर्तमान समय में समावेशी कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ, ज्ञान सृजन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आदि ऐसे शैक्षणिक सरोकार हैं, जिनके परिप्रेक्ष्य में अध्यापक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन सरोकारों को समाहित करे। इन्हीं सरोकारों पर आधारित लेख 'समावेशन की कुंजी—कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ' में कक्षा-कक्ष

के वास्तविक अनुभवों के आलोक में उपयुक्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को जानने एवं समझने का प्रयास किया गया है।

'सहायक (Assistive) प्रौद्योगिकी और समावेशी शिक्षा' नामक लेख में इस बात पर चर्चा की गई है कि कैसे सहायक प्रौद्योगिकी समावेशी शिक्षा व्यवस्था में सहायक सिद्ध हो सकती है। वहीं, 'कला और शिक्षा' पर आधारित लेख में कला को 'जानने' और 'होने' की एक विधा मानते हुए इसकी स्वरूपगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

'पढ़ने की प्रक्रिया का समाज-सांस्कृतिक और आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य' लेख में पिछले दशकों में हुए शोध अध्ययनों एवं सैद्धांतिकी तथा पढ़ने के आलोचनात्मक उपागम के माध्यम से पढ़ने की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया गया है।

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों में हिंदी भाषा शिक्षण के साथ-साथ एक विषय के रूप में पाठ्यचर्या के सभी विषयों में भाषा पढ़ाई जाती है। इस विषय के माध्यम से विद्यार्थी-शिक्षकों में भाषा के विविध पहलू तथा विभिन्न विषयों की विषय-वस्तु को सीखने-सिखाने की समझ विकसित होती है। इसी संदर्भ में लेख 'शिक्षक शिक्षा में हिंदी भाषा— स्थिति, चुनौतियाँ एवं सुझाव' दिया गया है।

'इतिहास का शिक्षण एवं अधिगम — तथ्यों की समझ और अनुभव का विकास' पर आधारित लेख इतिहास विषय के अध्ययन और अध्यापन को रुचिपूर्ण और सरल बनाने के साथ-साथ तथ्यों की प्रमाणिकता की जाँच के लिए भी प्रस्ताव रखता है।

शोध पत्र 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)' में होशंगाबाद शहर के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 6 से 8) में कार्यरत 100 शिक्षकों (50 पुरुष एवं 50 महिलाएँ) का यादृच्छिक विधि से चयन कर प्रदत्त संकलित किए गए। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है।

'सशक्तीकरण की ओर दिव्यांग बच्चों का मनोसामाजिक विश्लेषण और जागरूकता के पहलू' नामक लेख में दिव्यांग होने के कारणों, दिव्यांगता की पहचान, दिव्यांगता की रोकथाम, दिव्यांगजनों को सशक्त एवं सक्षम बनाने में शिक्षा की भूमिका, सरकार के प्रयासों तथा परिजनों की भूमिका आदि को प्रस्तुत किया गया है।

आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास (Best Practices), पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, क्षेत्र अनुभव (Field Experiences) आदि प्रकाशन हेतु पीछे दिए गए पते पर भेजेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति